GEOGRAPHY

Test-6

OPT DTVF -23 **G-2306**

Time Allowed: Three Hours

Maximum Marks : 250

Name: Jatin Kumar

Mobile Number:

Medium (English/Hindi): Hindi

Reg. Number: ______________________________

Center & Date: Online – 02.08.2023

UPSC Roll No. *(If allotted)*:

QUESTION PAPER SPECIFIC INSTRUCTIONS

Please read each of the following instruction carefully before attempting questions:

*There are **EIGHT** questions divided in **TWO SECTIONS** which are printed in **ENGLISH.***

*Candidate has to attempt **FIVE** questions in all.*

*Questions no. **1** and **5** are compulsory and out of the remaining, any **THREE** are to be attempted choosing at least **ONE** from each section.*

The number of marks carried by a question/part is indicated against it.

Answers must be written in the medium authorized in the Admission Certificate which must be stated clearly on the cover of this Question-cum-Answer (Q.C.A.) Booklet in the space provided. No marks will be given for answers written in a medium other than the authorized one.

Word limit in questions, wherever specified, should be adhered to.

Illustrate your answers with suitable sketches/maps and diagrams, wherever considered necessary. These shall be drawn in the space provided for answering the question itself.

Attempts of questions shall be counted in sequential order. Unless struck off, attempt of a question shall be counted even if attempted partly. Any page or portion of the page left blank in the Question-cum-Answer Booklet must be clearly struck off.

Q. No.	a	b	c	d	e	Total Marks	Q. No.	a	b	c	d	e	Total Marks
1	4.5	4.5	4.5	3	3.5		5	4	4	4.5	4.5	4.5	
2							6						
3	6	6.5	6.5				7	10	5.5	6			
4							8	7.5	6.5	5.5			
						Grand Total							101.5

D01305

Evaluator (Signature)

Reviewer (Signature)

Feedback

1. Context Proficiency
2. Introduction Proficiency
3. Content Proficiency
4. Language/Flow
5. Conclusion Proficiency
6. Presentation Proficiency

---

① संदर्भ की समझ ठीक है

② परिचय को और बेहतर लिखने के लिए 'की वर्ड' को परिभाषित करें

③ विषयवस्तु की समझ ठीक है। इसे और बेहतर करें

④ लेखन शैली ठीक है

⑤ निष्कर्ष को और प्रभावी बनाएँ। भविष्य की राह को शामिल करें

⑥ प्रस्तुतीकरण ठीक है

Copyright – Drishti The Vision Foundation

भूगोल Test-6 | G-2306

(Please do not write anything except the question number is this space)
कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें!

UPSC

Answer Questions in NOT MORE THAN the Word Limit specified for each in the Parenthesis.
Content of the Question is more important than length.
(Specimen Answer Booklet - For Practice Purpose Only)

उम्मीदवारों को इस हाशिए में नहीं लिखना चाहिए!
Candidates must not write on this margin.

1 (a) ग्रामीण - शहरी सीमा पर एक संक्षिप्त टिप्पणी लिखिये।

एच एम मेयर के अनुसार ग्रामीण-शहरी सीमा, ग्राम एवं शहर के मध्य उपस्थित वह क्षेत्र है जहाँ भूमि उपयोग में परिवर्तन होता है एवं ग्रामीण व्यवसाय धीरे-धीरे परिवर्तित होकर शहरी होने की ओर अग्रसर होते हैं।

भूमिका ठीक है

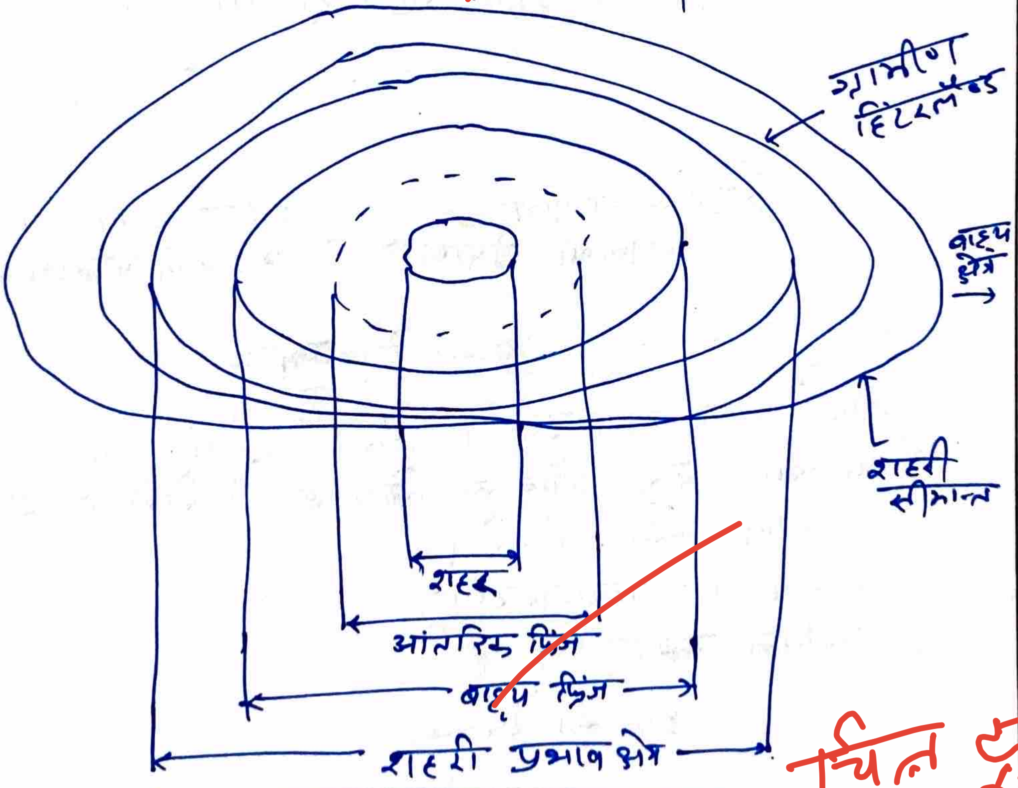

चित्र: ग्रामीण - शहरी सीमा

चित्र द्वारा प्रस्तुतीकरण अच्छा है

ग्रामीण - शहरी सीमा क्षेत्र बनने के कारण -

पुश कारक	पुल कारक
1. शहरी आय में वृद्धि	1. ग्रामीण शान्त माहौल
2. शहरी पर्यावरण प्रदूषण	2. पर्यावरण स्थिरता

3. परिवहन के साधनों की उपस्थिति	3. निम्न भूमि किराया
4. शान्त वातावरण की खोज	4. भूमि की उपलब्धता
5. रहने योग्य जगह की कमी	5. प्राकृतिक संसाधन जैसे जल की उपलब्धता
6. भूमि की कीमतों में वृद्धि	6. प्रशासनिक करों की कमी
7. भूमि किराये उच्च	

ग्रामीण - शहरी सीमा का विकास एवं प्रभाव -

अन्य
↓
ग्रामीण शहरी सीमा में हवाई अड्डे, फार्म हाउस, खाली भूमि का गहन उपयोग

ग्रामीण क्षेत्र → भूमि उपयोग परिवर्तन
↓
व्यवसाय में परिवर्तन
↓
शहरी व्यवसायों का गाँव में प्रतिस्थापन → ← शहरी- ग्रामीण व्यवस्था निर्माण

ग्रामीण शहरी सीमा बनने के लाभ :-

1) शहरों पर कम दबाव जैसे - गुडगाँव के निकट मानेसर तक गाँव से लोग शहरी क्षेत्रों में कार्य/व्यवसाय करने जाते हैं।
2) पर्यावरण स्थिरीकरण
3) जीवन स्तर में वृद्धि
4) ग्रामीण क्षेत्र का विकास

कंटेंट की समझ ठीक है

दीर्घकाल में ग्रामीण -शहरी सीमा शहर में ही परिवर्तित हो जाती है एवं अन्य ग्रामीण क्षेत्र तक विकास के लिए प्रतिबद्ध होती है। यह प्रक्रिया निरन्तर चलती रहती है।

4.5/10

1. (b) जनसंख्या का वितरण पैटर्न स्थूल और सूक्ष्म दोनों पैमानों के इलाके से प्रभावित होता है। विस्तार से चर्चा करें।

भूमिका ठीक है।

जनसंख्या वितरण ऐतिहासिक, सांस्कृतिक, सामाजिक, तकनीकी व भौगोलिक कारकों से प्रभावित होता है। क्रेसी के अनुसार कुछ क्षेत्रों में अधिकतर जनसंख्या रहती है एवं अधिकतर क्षेत्रों में कुछ जनसंख्या रहती है।

जनसंख्या वितरण को प्रभावित करने वाले कारक

1) ऐतिहासिक कारक –

- ऐतिहासिक शहरों में प्राचीनकाल से ही जनसंख्या का निवास

उदा.– दिल्ली, कलकत्ता व मुम्बई में अंग्रेजों द्वारा जनसंख्या प्रतिरूप बसाया जाना

2) सामाजिक व सांस्कृतिक कारक –

- जनसंख्या अपने मूल्य, संस्कृति, भाषा, रहन-सहन आदि कारकों द्वारा प्रभावित होती है।

उदा – अधिकतर जनजातीय समुदाय वनीय क्षेत्रों मे पाये जाते है।

3) राजनैतिक कारक –

- राजनैतिक स्थिरता व नीतियों द्वारा प्रभावित

(उदा.) रोहिंग्या शरणार्थियों का भारत में आना

4) प्रवास कारक –

– जीवन स्तर में वृद्धि, उच्च आय की संकल्पना एवं बेहतर अवसर तथा शिक्षा आदि की प्राप्ति के लिए प्रवास द्वारा जनसंख्या पुनर्वितरित होती है।

परिवहन मार्गों का विकास

5) भौगोलिक कारक –

– भौगोलिक अवरोध (जैसे - उच्चावच) जलवायु, तापमान, मृदा की उपजाऊपन आदि कारक जनसंख्या के लिए महत्वपूर्ण कारक का कार्य करते हैं।

(उदा.) अधिकांश जनसंख्या नदी स्रोत के आसपास उपजाऊ क्षेत्रों मे पायी जाती है – हड़प्पा सभ्यता।

दुनिया की कुल आबादी का केवल 20% हिस्सा ही समुद्रतल से 500 मी. की ऊंचाई से ऊपर रहता है

क्लार्क के अनुसार 90% जनसंख्या उत्तरी गोलाई एवं 10% जनसंख्या दक्षिणी गोलार्ध में निवास करती है। जनसंख्या के उचित प्रबंधन की आवश्यकता है ताकि संसाधनों का अनुकूलतम दोहन संभव हो सके।

4.5/10

① (c) क्रिस्टालर और लॉश के मॉडल के बीच तुलनात्मक विश्लेषण कीजिये।

क्रिस्टोलर ने केन्द्र स्थल का सिद्धान्त प्रतिपादित किया जिसे लॉश ने 1933 में कुछ सीमा तक अद्यतन किया। दोनों की मूल अवधारणा सिद्धान्त को एकल बाजार बनाने की थी जिसके चारों ओर से लोग वहाँ तक पहुँच बनाते हैं।

भूमिका ठीक है

मान्यताएं –

1. समरूप धरातल की उपस्थिति
2. व्यक्ति आर्थिक व विवेकी हैं
3. एक ही बाजार की उपलब्धता
4. लोगों की समान पहुँच
5. समान आय व समान माँग

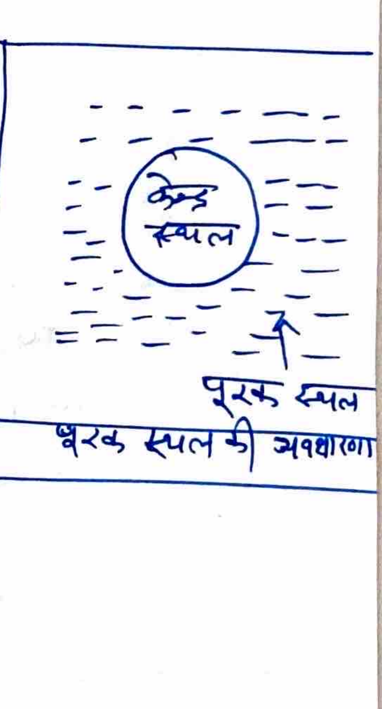

पूरक स्थल की अवधारणा

सिद्धान्त की सामान्य अवधारणाएं –

1. केन्द्र स्थल की अवधारणा
2. केन्द्र स्थल का कार्य
3. केन्द्र स्थल में केन्द्रीयता
4. पूरक क्षेत्र
5. माल व सेवाओं की परास
6. थ्रेसोल्ड जनसंख्या

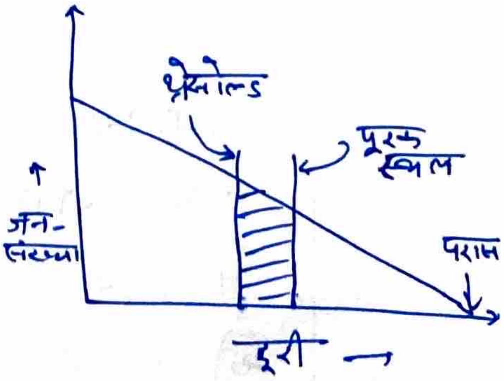

केन्द्र स्थल सिद्धान्त

क्रिस्टोलर व लॉश के मॉडल में तुलना

क्रिस्टोलर	लॉश
1. जर्मनी पर आधारित	- लोवा (USA) पर आधारित
2. मुख्यतः विकसित क्षेत्रों के लिए मान्य	- विकासशील देशों पर लागू
3. अधिक PCI क्षेत्र	- कम PCI क्षेत्र
4. केन्द्रीयता, ध्रुवीकरण का सिद्धान्त	- विकेन्द्रीयता व विध्रुवीकरण का सिद्धान्त
5. केन्द्राभिमुखी प्रवृत्ति	- केन्द्रापसारी प्रवृत्ति
6. सामान्यतः 1 केन्द्र स्थल	- एकाधिक बिन्दु
7. लगभग समान आय स्तर	- आय में विषमता
8. आपूर्ति आधारित	- माँग आधारित
9. 3 माल पर आधारित	- 150 माल व सेवाओं पर आधारित

क्रिस्टालर का मॉडल केवल सेवाओं पर आधारित है

लॉश का मॉडल विनिर्माण और उद्योगों को भी स्थान देता है

क्रिस्टोलर व लॉश के सिद्धान्त हालाँकि सम्पूर्ण विश्व धरातल पर एक-समान लागू नहीं होते किन्तु मॉडल के रूप में इनके आधार पर सम्भावनाएँ व्यक्त की जा सकती हैं।

4.5/10

① (a) स्पेंसर द्वारा प्रस्तुत आर्थिक विकास के चरणों की चर्चा कीजिये।

स्पेन्सर के अनुसार आर्थिक विकास से आशय व्यक्ति के समान व समावेशी विकास से है। यह एक गुणात्मक अवधारणा है।

प्रभावी भूमिका लिखें

आर्थिक विकास के चरण –

1) **प्रारम्भिक अवस्था –**

- मानव द्वारा कौशल प्राप्त करना
- कम कौशल के कारण कम आय के साधन

① शिकार एवं संग्रहण का चरण

2) **मध्य अवस्था –**

- कौशल विकास के बाद व्यक्ति के पास रोजगार के अवसर अतः आर्थिक विकास
- आर्थिक विकास का उत्कर्ष व चरम प्रभाव

② पशुचारण अवस्था → मांस दूध का

उपयोग बढ़ा

(Please do not write anything except the question number is this space)
कृप्या इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें!

UPSC

Answer Questions in NOT MORE THAN the Word Limit specified for each in the Parenthesis.
Content of the Question is more important than length.
(Specimen Answer Booklet - For Practice Purpose Only)

उम्मीदवारों को इस हाशिए में नहीं लिखना चाहिए!
Candidates must not write on this margin.

3) चरम अवस्था

- विकास के कारण देश का समग्र विकास
- व्यक्ति में ऊँचे मूल्यों का विकास

अतः विकास एक गतिशील व तुलनात्मक अवधारणा है जो सभी के लिए सुलभ व समान होनी चाहिए।

③ कृषि चरण
↓
लोगों का मुख्य व्यवसाय कृषि हो गया

④ औद्योगिक अवस्था
↓
प्रौद्योगिकी का विकास
नगरीकरण में वृद्धि

3/10

① (e) शहरी प्रभाव क्षेत्र पर एक संक्षिप्त टिप्पणी लिखें।

'शहरी प्रभाव क्षेत्र' शब्द का सर्वप्रथम प्रयोग नॉर्थम ने किया। शहरी प्रभाव क्षेत्र से आशय शहर के आस-पास उस क्षेत्र से है जहाँ तक शहर की माल व सेवाओं का प्रचलन है एवं लोग अपनी आवश्यकता पूर्ति के लिए जितनी दूरी से शहरी क्षेत्र तक आते हैं।

भूमिका ठीक है

UN के अनुसार शहरी प्रभाव क्षेत्र -

5000-10000 जनसंख्या वाले शहर	1 लाख से अधिक जनसंख्या वाले शहर
1. साईकिल खरीद 2. सस्ते सामान एवं दैनिक उपयोग वाले सामान 3. प्रारम्भिक शिक्षा 4. कृषि के सामान्य उपकरण 5. जाति व निवास प्रमाण पत्र	1. मँहगे वाहन एवं आभूषण खरीद 2. उच्च शिक्षा की प्राप्ति के लिए 3. कृषि के महंगे उपकरण 4. प्रशासनिक कार्य के लिए

R. L. सिंह ने भारतीय शहर ~~लखन~~ वाराणसी के प्रभाव क्षेत्र का अध्ययन दो आधारों पर किया

(1) माँग आधारित (2) सप्लाई आधारित

दूरी ह्रास प्रभाव →

शहर तथा गाँवों के बीच संपर्क की तीव्रता शहर से दूरी के साथ तेजी से कम होती है

① मांग आधारित – सब्जी, खाद्यान्न, लेबर
दूध

② सप्लाई आधारित -

– अखबार
– प्रशासनिक सुविधा

इसके बाद उजागर सिंह द्वारा KAVAL शहरों का अध्ययन (1962)

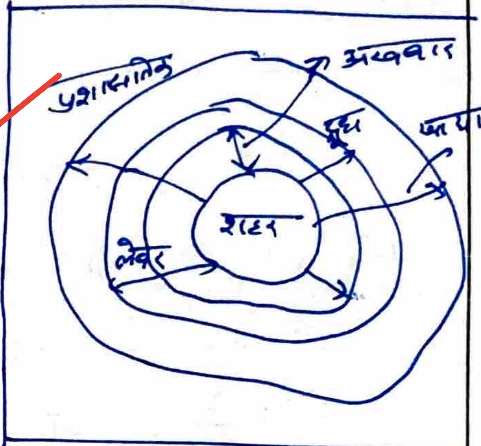

चित्र - वाराणसी का शहर प्रभाव

⇒ शहरी प्रभाव क्षेत्र को मापने के लिए मात्रात्मक प्रणाली –

ज्यामितीय रूप में

(i) स्काईलाईन तरीका –
– विभिन्न मदों के प्रभाव क्षेत्रों की अन्तिम सीमा

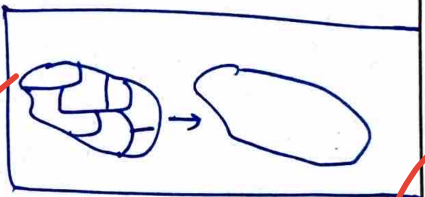

(ii) प्रॉक्सिमल तरीका –
– सभी मदों के प्रभाव क्षेत्र की मध्य बिन्दु को मिलाकर एक अनियमित आकार

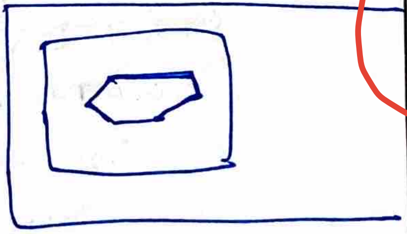

2 सांख्यिकी रूप में – मानक विचलन द्वारा

अतः शहरी प्रभाव क्षेत्र एक प्रश्न० योग्य वास्तविक संकल्पना है किन्तु ऑनलाईन तरीकों एवं सूचना क्रांति ने इसका प्रभाव व्यापक कर दिया है।

अनावश्यक विस्तार से बचें प्रश्नानुसार ही विवरण दें।

3.5/10

③ (a) भारत में ग्रामीण बस्तियों के सामने आने वाले प्रमुख पर्यावरणीय मुद्दों पर चर्चा करें।

भारत में ग्रामीण बस्तियाँ लगभग 70% जनसंख्या को समेटे हुए है लगभग 6.5 लाख गाँव मुख्यत: प्राथमिक कार्यों जैसे कृषि, खनन एवं मत्स्यपालन में लगे हुए है।

प्रश्नानुसार भूमिका लिखें

जनसंख्या में वृद्धि भूमि पर अधिक दबाव उर्वरक, कीटनाशकों के प्रयोग में वृद्धि आदि से पर्यावरणीय मुद्दे हावी हो रहे हैं

ग्रामीण बस्तियों के विकास के कारक :-

1) ऐतिहासिक - प्राचीन काल से रहते आ रहे लोग अपने मूल स्थान को छोड़ने के लिए कतई राजी नही है एवं वे अपनी बस्ती को और अधिक संहत बनाने पर कार्यरत है।

2) सामाजिक सांस्कृतिक - समान वंश, जाति व धर्म के लोग एक ही बस्ती में रहना चाहते हैं।

3) धार्मिक कारण - समान धर्म एवं एक ही पूजा स्थल के निकट लोग समान धार्मिक क्रियाओं में संलग्न रहते है एवं बस्ती को सघन करते हैं।

अनावश्यक लेखन से बचें।

4) भौगोलिक कारक - प्राचीन बस्तियाँ मुख्यत: किसी जल स्रोत यथा नदी, झील, तालाब के सहारे ही निवास करती थी जैसे - हड़प्पा आदि।

ग्रामीण बस्तियों में परिवर्तन :-

1) वैश्वीकरण का प्रभाव - वैश्वीकरण के प्रभाव में ग्रामीण बस्तियों से लोग एकाकी जीवन व्यतीत करने हेतु प्रस्थान करते हैं जिससे बस्ती के प्रारूप मे परिवर्तन होता है।

2) शहरीकरण एवं प्रवास - उच्च जीवन स्तर की चाह, अवसरों में वृद्धि एवं उच्च आय जैसे शहरी पुल कारक ग्रामीण लोगों को अपनी ओर आकर्षित करते हैं।

3) मलिन बस्तियों का निर्माण - शहरों के चारो ओर मलिन बस्तियों का निर्माण होता है। एशिया की सबसे बड़ी मलिन बस्ती - धारावी (मुम्बई) मे है। भारत की 7.5 लाख से भी अधिक मलिन बस्तियों में 65 मिलीयन लोग निवास करते हैं।

अनावश्यक विस्तार से बचें

4) व्यक्तिवाद एवं भौतिकता - व्यक्ति भौतिक सुखों की चाह में अकेले निवास करना उचित समझता है जिससे बस्ती प्रारूप परिवर्तन हो रहे हैं।

ग्रामीण बस्तियों में प्रमुख पर्यावरणीय मुद्दे :-

1) जल प्रदूषण - दिन-प्रतिदिन बढ़ते प्लास्टिक उपयोग एवं धार्मिक मान्यताओं के कारण लोग पानी के स्रोतों में जैव-अनिम्नीकरणीय पदार्थ बहा देते हैं।

2) वायु प्रदूषण - दुपहिया व चौपहिया वाहनों की बढ़ती संख्या के कारण

3) मृदा अपरदन एवं मृदा अवनयन :-
- अनियोजित ग्रामीण विकास
- अधारणीय कृषि पद्धतियाँ
- कृषि में अत्यधिक रसायनों का उपयोग
- मृदा का अपरदन एवं मृदा की गुणवत्ता में कमी

4) निर्वनीकरण - बढ़ती हुई जनसंख्या के आवास के लिए जगह आवश्यक

इस भाग को विस्तार से चर्चा

है अत: वनों की क्षरण की प्रक्रिया अत्यधिक हो रही है।

(उदा०) - ग्लोबल फोरेस्ट वाच के अनुसार भारत में २०२१ में लगभग 17% वन नष्ट हो गये।

5) संसाधनों का अतिदोहन - संसाधनों का गैर-नियोजित एवं अति दोहन के कारण सीमित संसाधन जैसे - कोयला आदि का ह्रास हो रहा है एवं मानव के लिए ऊर्जा के अन्य स्रोतों की खोज आवश्यक हो गयी है।

मॉडल उत्तर देखें

विभिन्न पहलें →
- LiFE मिशन
- COP-15 के तहत लक्ष्य
- SDG लक्ष्य
- भारत द्वारा पंचप्रण
- अन्तर्राष्ट्रीय सोलर अलायंस

बढ़ती जनसंख्या हेतु बस्तियों की अत्यावश्यकता है किन्तु हमें वैज्ञानिक तरीकों से संधारणीय आवास को प्रोत्साहित करने की आवश्यकता है।

विषयवस्तु की समझ को बेहतर करें

6/20

3 (b) इष्टतम जनसंख्या को परिभाषित करें और दुनिया भर के उदाहरणों का उपयोग करके इष्टतम जनसंख्या सिद्धांत की व्याख्या करें।

इष्टतम जनसंख्या से आशय उस जनसंख्या से है जहाँ उपलब्ध संसाधनों एवं तकनीकों का उपयोग करके प्रत्येक व्यक्ति के लिए अधिकतम आय सुनिश्चित की जा सके।

भूमिका को और स्पष्ट कर सकते हैं

+ जनसंख्या उपलब्ध संसाधनों के साथ संतुलित हो।

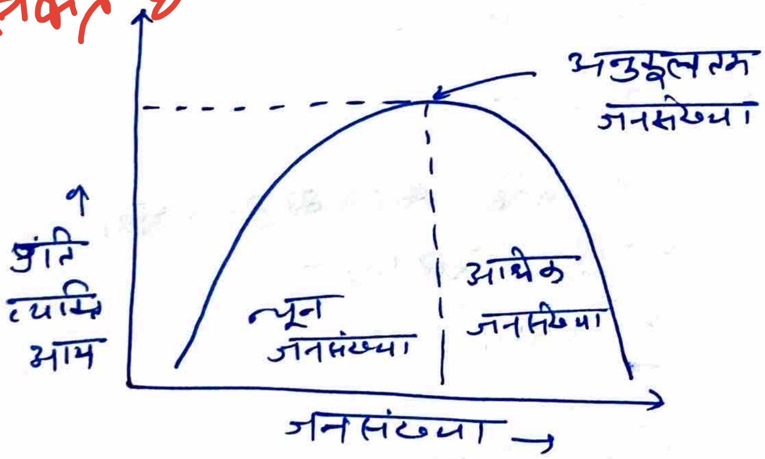

अनुकूलतम जनसंख्या के अध्ययन के लिए कुछ मान्यताएं पूर्व निर्धारित की जाती हैं:-

1. संसाधन निश्चित एवं स्थिर हैं
2. व्यक्ति के कार्य के घण्टे निश्चित हैं
3. व्यक्ति की मांग निश्चित हैं
4. व्यक्ति की क्षमता एवं पूंजी निवेश समान हैं
5. तकनीकें स्थिर हैं।

6. व्यक्ति की मॉंग एवं स्वाद समय के अनुसार परिवर्तित नहीं होता।

इष्टतम जनसंख्या होने के लाभ :-

1) प्रत्येक व्यक्ति के पास समान अवसर
2) समान दक्षता एवं समान तकनीकी पहुँच
3) सभी के लिए समान व उच्च जीवन स्तर
4) महिला व पुरुष विभेद नहीं
5) संधारणीय विकास
6) घृणा, द्वेष व द्वन्द्व की अनुपस्थिती व विकासशील समाज
7) स्वस्थ प्रतिस्पर्धा

उपरोक्त बिन्दुओं का प्रयोग करें

इष्टतम जनसंख्या लाने के प्रयास -

1) भारत द्वारा 'बच्चे दो ही अच्छे' एवं छोटा परिवार सुखी परिवार जैसी अवधारणाओं के साथ तीव्र जनसंख्या वृद्धि को सीमित करने का प्रयास किया जा रहा है।
2) चीन द्वारा एक बच्चा नीति का उपयोग करके अपनी जनसंख्या

को स्थिर किया गया है एवं चीन की जनसंख्या में कमी आना प्रारम्भ हो गयी।

3) विकसित देश जैसे - USA व जापान में अत्यन्त न्यून वृद्धि अथवा नकारात्मक वृद्धि के प्रतिरूप देखने को मिलते हैं।

आलोचना -

1) इष्टतम जनसंख्या अभी तक किसी देश में देखी नहीं गयी है।
2) इष्टतम जनसंख्या की अवधारणा मनगढ़ंत एवं आदर्शवादी प्रतीत होती है।
3) इसे किसी देश द्वारा अपनी जनसंख्या नीतियों में स्थान नहीं दिया जाता है।
4) मापन कठिन

इष्टतम जनसंख्या किसी देश में उपलब्ध संसाधनों का अनुकूलतम उपयोग करके सभी नागरिकों के समान विकास की अवधारणा का पर्याय है।

यदि सभी संसाधनों का विकसित करने के लिए पर्याप्त लोग नहीं हों तो जनसंख्या का जीवन स्तर उतना नहीं हो पाता ↓ जैसे ब्राजील में

6.5/15

③ (c)

भारत में विनिर्माण क्षेत्र में वैश्विक पावर-हाउस बनने की अपार क्षमता है। इस संबंध में, इस क्षेत्र को बढ़ावा देने के लिए सरकार की क्या पहल हैं?

भारत का विनिर्माण क्षेत्र

परिचय ठीक है

भारत की GDP में लगभग 27% तक का योगदान करता है। भारत विनिर्माण क्षेत्र के अपने सभी संसाधनों का अनुकूलतम उपयोग करके वैश्विक पावर हाउस बनाने की क्षमता रखता है। 1

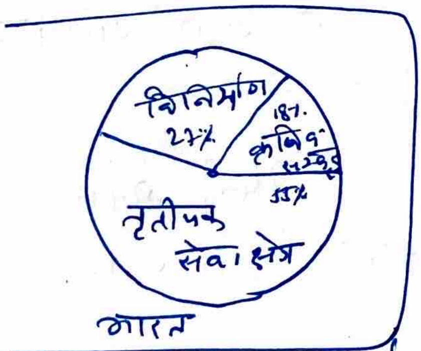

चित्र: GDP में योगदान

भारत में विनिर्माण क्षेत्र हेतु अवसर :-

① विशाल जनसंख्या :-

- भारत वैश्विक जनसंख्या में लगभग 17.7% योगदान देता है। अतः एक विशाल जनांकिकीय लाभांश (15-64 वर्ष की आयु) वाला देश भारत कौशल व अर्ध-कुशल कामगार का एक वृहत् 2 धड़ा है।

② विशाल बाजार उपलब्धता -

- भारत के पास स्वयं का untapped Potential
- विदेशी सम्बन्ध - अफ्रीकी देश व पड़ोसी मध्य एशिया के देश

③ सरकारी नीतियां -

- मेक इन इंडिया जैसी सरकारी पहलों ने भारत में विनिर्माण क्षेत्र के अवसरों में वृद्धि की है।

वर्तमान में राष्ट्रीय विनिर्माण नीति के अतक

- राष्ट्रीय औद्योगिक विनिर्माण क्षेत्र
- ई-बिज मिशन मोड कार्यक्रम
- MSME विकास

सरकार की पहलें :-

1) मेक इन इंडिया :-

- सरकार वैश्विक विनिर्माणकर्ताओं से आग्रह करती है कि वे भारत में आकर उत्पादन करें। उन्हें सरकारी सहायता, सिंगल प्वांइट क्लीयरेन्स आदि सुविधा उपलब्ध करायी जाती हैं।

2) टेक्सटाइल उद्योग के लिए -

- PM-MITRA पार्क
- SAMARTH योजना (टेक्सटाइल क्षेत्र की क्षमता निर्माण के लिए स्कीम)

3) MSME हेतु -
- PLI स्कीम
- MUDRA योजना - शिशु, किशोर, तरुण

4) स्टील क्षेत्र :-
- पूर्वोदय योजना
- PLI स्कीम

औद्योगिक गलियारों की चर्चा कर सकते है

5) लौहा क्षेत्र एवं खनिज -
- हाइड्रोकार्बन एक्सप्लोरेशन लाइसेंसिंग नीति
- नवीन एक्सप्लोरेशन लाइसेंसिंग नीति

6) निर्यातकों के लिए -
- नयी व्यापार नीति - ई-कॉमर्स को प्रोत्साहन, SCOMET नीति
- विभिन्न स्तरों पर सब्सिडी

अतः भारत सरकार की विभिन्न पहलों ने भारत को 2027 तक तीसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बनाने के दरवाजे खोल दिए हैं।

की

कंटेंट ठीक
समझ ठीक है

6.5/15

(Please do not write anything except the question number is this space)
कृप्या इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें!

UPSC

Answer Questions in NOT MORE THAN the Word Limit specified for each in the Parenthesis.
Content of the Question is more important than length.
(Specimen Answer Booklet - For Practice Purpose Only)

उम्मीदवारों को इस हाशिए में नहीं लिखना चाहिए!
Candidates must not write on this margin.

3. ⑤ (9)

निम्नलिखित प्रश्नों का उत्तर लगभग 150 शब्दों में दीजिये; आधुनिक इस्पात उद्योग वेबर के औद्योगिक स्थान सिद्धांत का पालन नहीं करते हैं। टिप्पणी करें।

भूमिका ठीक है

वेबर ने औद्योगिक अवस्थिति का सिद्धान्त प्रतिपादित किया जिसके लिए उन्होंने कच्चा माल, बाजार एवं लेबर को अत्यधिक महत्व प्रदान किया।

वेबर की अधिमान्यताएं –

1) एक समरूप धरातल
2) केवल एकल बाजार
3) परिवहन व्यय, दूरी व भार के समानुपाती
4) मानव आर्थिक व विवेकी

- कच्चा माल शुद्ध अथवा स्थूल हो सकता है जिसके आधार पर उद्योग की अवस्थिति निर्धारित होती है।

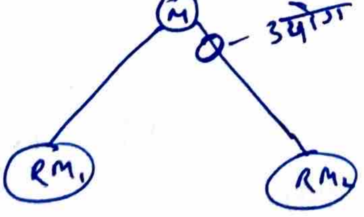

यदि कच्चा माल
RM1 शुद्ध है
RM2 स्थूल है

यदि कच्चा माल एक ही एवं शुद्ध है

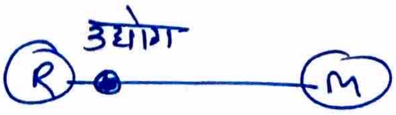

यदि कच्चा माल स्थूल है।

वर्तमान औद्योगीक क्षेत्र (इस्पात) - वेबर के अनुरूप नहीं

1) विभिन्न कच्चा माल स्रोत जैसे- लौहा ; कोयला, मैंगनीज आदि की सुदूर क्षेत्रों से प्राप्ति संभव

2) परिवहन सुविधाओं का विकास- सस्ता रेल परिवहन

3) स्कुल व शुद्ध कच्चा माल तकनीकों द्वारा भिन्न - क्षेत्रों तक संचारित

4) लेबर की व्यापक उपलब्धता नहीं एवं लेबर के कार्य का विभाजन

5) इस्पात उद्योगों का झारखण्ड व छत्तीसगढ़ से बाहर क्षेत्रों में पाया जाना जैसे - मैसूर आयरन एण्ड स्टील वर्क्स आदि।

शुद्ध स्क्रैप स्टील की उपलब्धता के कारण शहरी इस्पात इकाइयाँ बढ़ रही हैं जैसे न्यू दिल्ली

अतः वेबर का औद्योगीक सिद्धान्त समय के अनुसार बदलने में असफल रहा है किन्तु एक साधारण समझ बनाने के लिए यह उपयोगी है।

कंटेंट की समझ ठीक है इसे और बेहतर कर सकते हो

4/10

5 (b) सतत शहरी विकास पर एक संक्षिप्त टिप्पणी लिखें।

भूमिका ठीक है

UN की बैठक मे सतत विकास की अवधारणा को भविष्य की पीढ़ियों के लिए संसाधनों के उपयोग से समझौता ना करते हुए वर्तमान पीढ़ी द्वारा अनुकूलतम उपयोग के रूप में माना गया है।

वहीं बर्लिन में संधारणीय विकास पर बैठक में संधारणीय विकास को विकास की सामाजिक, सांस्कृतिक व पर्यावरणीय तथा आर्थिक अवधारणा के रूप में माना।

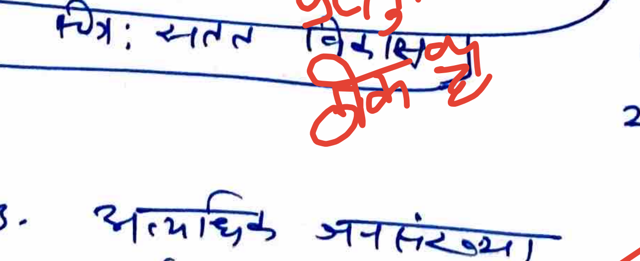

चित्र: सतत विकास

फ्लोचार्ट द्वारा प्रस्तुतीकरण ठीक है

सतत शहरी विकास की आवश्यकता क्यों ?

1. बढ़ता शहरीकरण
2. बढ़ती प्राकृतिक एवं मानवीय आपदा
3. अत्यधिक जनसंख्या
4. पर्यावरण का ह्रास
5. मलिन बस्तियों का विकास

सतत शहरी विकास :-

1) नियोजित शहरीकरण को प्रोत्साहन
उदा. – चण्डीगढ़, नोयडा आदि
2) संसाधनों का अनुकूलतम उपयोग
3) निवासियों को बेहतर प्राथमिक स्वास्थ्य सुविधायें – दिल्ली में मोहल्ला क्लिनिक
4) परिवहन का सार्वजनिक स्वरूप
उदा. – इलेक्ट्रिक बसों का उपयोग
5) नीति-निर्माण में पर्यावरण को भागीदार बनाना
6) प्रवास का उचित प्रबंधन उदा. चीन से सीख ली जा सकती है
7) अन्तर्राष्ट्रीय सहयोग की आवश्यकता
उदा. शहरों पर अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन

सतत शहरी विकास सुनिश्चित करके से SDG लक्ष्य 11 की पूर्ति संभव है।

शहरी (स्वास्थ्य) अवसंरचना
↓
आर्थिक स्थिरता
- सामाजिक स्थिरता
- प्राकृतिक स्थिरता
↓
प्राकृतिक संसाधनों का तार्किक लागत प्रबंधन

4/10

(Please do not write anything except the question number is this space)
कृप्या इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें!

UPSC

Answer Questions in NOT MORE THAN the Word Limit specified for each in the Parenthesis.
Content of the Question is more important than length.
(Specimen Answer Booklet - For Practice Purpose Only)

उम्मीदवारों को इस हाशिए में नहीं लिखना चाहिए!
Candidates must not write on this margin.

5 (c) "जनसंख्या विकास रणनीतियों की धुरी बनाती है"। परीक्षण करें।

किसी विशेष प्रदेश में रहने वाली प्रजातियों के लोगों/ जीवों की संख्या जो आपस में breeding कर सके, जनसंख्या कहलाती है। विश्व की वर्तमान जनसंख्या 9 अरब से भी अधिक है। — WHO के अनुसार

भूमिका ठीक है प्रश्नानुसार इसे और बेहतर कर सकते हैं

जनसंख्या का विकास रणनीतियों में योगदान :-

(i) अल्प जनसंख्या होने पर :-

(i) विभिन्न देश जैसे जापान, रूस आदि में जनसंख्या कम है अर्थात् यहाँ संसाधनों का अनुकूलतम दोहन नहीं हो पा रहा है।

(ii) मशीनों का अत्यधिक उपयोग

(iii) जनसंख्या वृद्धि की रणनीतियाँ एवं प्रोत्साहन

(iv) सरकारी कार्यों में शिशुओं की माँग एवं शिशु होने पर प्रोत्साहन

(v) विवाह की निम्न आयु

(vi) गोद लेने की प्रक्रिया आसान
(vii) लिव इन से जन्मे बच्चे को मान्यता

जनसंख्या के समायोजन से
- गरीबी से निपटने
- पर्यावरण की रक्षा
- सतत विकास में सुधार

2. जनसंख्या अधिक होने पर -

(i) भारत व नाइजीरिया जैसे देशों में अत्यधिक जनसंख्या
(ii) जनसंख्या की रोकथाम के प्रयास जैसे - चीन की एक बच्चा नीति
(iii) बुजुर्गों के लिए सामाजिक सुरक्षा की व्यवस्था
(iv) जनांकिकीय लाभांश के लिए कौशल विकास योजना उदा० PM- कौशल विकास
(v) शादी की उम्र बढ़ाना
(vi) सीमा से अधिक बच्चे होने पर सरकारी सुविधाओं में कमी जैसे 2 से अधिक बच्चे होने पर कम मातृत्व अवकाश

कंटेंट की समझ ठीक है

अतः जनसंख्या की स्थिति, संरचना व वितरण को देखकर उस प्रदेश की नीति-निर्माण प्रक्रिया की जाती है एवं भविष्य के लिए अंदाजा लगाया जा सकता है।

4.5/10

⑤ (a) व्यवस्था विश्लेषण पर एक संक्षिप्त टिप्पणी लिखो।

व्यवस्था से आशय किसी तंत्र में इकाई की उपलब्धता एवं उसका अन्य इकाई व वातावरण से सम्बन्ध से है। तंत्र विश्लेषण को बर्टेलनफी द्वारा वनस्पति विज्ञान में प्रयोग किया गया था। भूगोल में इसे मर्फी ने प्रयोग में लाया।

भूमिका ठीक है

चोर्ले द्वारा

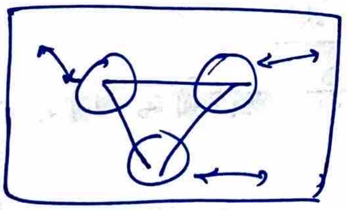

तंत्र/व्यवस्था

व्यवस्था विश्लेषण के तीन उपागम होते हैं।

1. इकाई
2. इकाईयों का आपसी सम्बन्ध
3. इकाईयों का पर्यावरण के साथ सम्बन्ध

व्यवस्था / तंत्र के प्रकार -

1. खुला तंत्र - ऊर्जा व पदार्थ का प्रवाह संभव
2. बंद तंत्र - ऊर्जा व पदार्थ का प्रवाह नहीं
3. Cascading - घटकों से प्रवाह का निरूपण

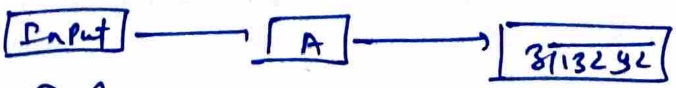

4. आकारिकी

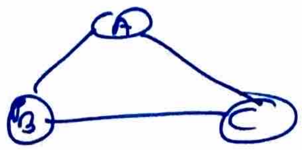

(Please do not write anything except the question number is this space)
कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

UPSC

Answer Questions in NOT MORE THAN the Word Limit specified for each in the Parenthesis.
Content of the Question is more important than length.
(Specimen Answer Booklet - For Practice Purpose Only)

उम्मीदवारों को इस हाशिए में नहीं लिखना चाहिए!
Candidates must not write on this margin.

5) प्रक्रिया प्रतिक्रिया -

- आकारिकी व Cascading का सम्मिलित रूप

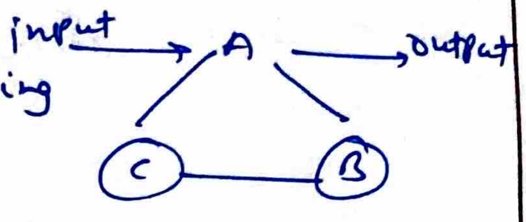

अच्छे व्यवस्था विश्लेषण

उपरोक्त तंत्र विश्लेषण के आधार पर तंत्र निम्न प्रकार सम्बन्धित हो सकते हैं।

1) श्रेणी क्रम -

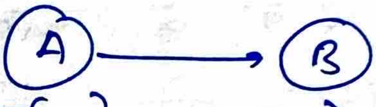

- जैसे - सिंचाई से उत्पादन में प्रभाव

भूगोल में जटिल संबंधों को समझने में सहायक

2) समान्तर क्रम -

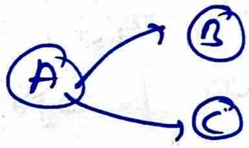

- वर्षा से → सिंचाई
→ जलवायु अच्छी

3) फीडबैक →

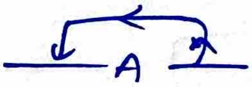

- संरचनागत विकास से आर्थिक विकास

4) यौगिकीकरण -

- सूर्य — गुरुत्व
\ प्रकाश

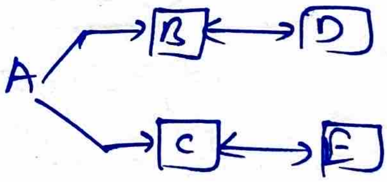

5) जटिल यौगिकीकरण -

- मेट्रो शहर, मानव निकाय

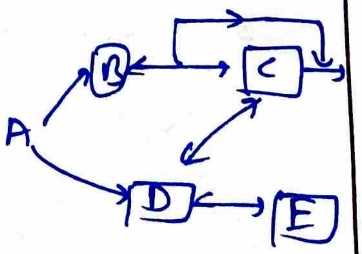

कंटेंट की समझ ठीक है

अत: तंत्र विश्लेषण से कारण - प्रभाव एवं इनपुट-आउटपुट के आधार पर निष्कर्ष निकाले जा सकते हैं।

9.5/10

⑤ (e) सैटेलाइट शहरों पर एक संक्षिप्त टिप्पणी लिखें।

होवर्ड के अनुसार गार्डन सिटी की संकल्पना द्वितीय विश्व युद्ध के बाद सेटेलाइट शहर में परिवर्तित हो गयी। मुख्य शहर की परिवहन लाईन पर उपस्थित ये शहर मुख्य शहर पर आर्थिक रूप से निर्भर किन्तु प्रशासनिक व अन्य कारकों में आत्मनिर्भर होते हैं।

परिचय ठीक है

सेटेलाइट शहर विकास के कारण –

1) मुख्य शहर में तीव्र जनसंख्या वृद्धि
2) पर्यावरण प्रदूषण
3) परिवहन साधनों का तीव्र विकास
4) भूमि की अनुपलब्धता एवं किराये में वृद्धि
5) व्यक्ति की आय में वृद्धि

सेटेलाइट शहर के प्रकार –

(1) शैक्षिक – BHU
(2) औद्योगिक
(3) आवासीय – गाजियाबाद
(4) मिश्रित – बहादुरगढ़
(5) प्रशासनिक – गाँधीनगर

सेटेलाइट नगरों में परिवहन टर्मिनल मुख्य शहर से कार्य करने वाले कर्मचारियों के

(Please do not write anything except the question number is this space)
कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें!

UPSC

Answer Questions in NOT MORE THAN the Word Limit specified for each in the Parenthesis.
Content of the Question is more important than length.
(Specimen Answer Booklet - For Practice Purpose Only)

उम्मीदवारों को इस हाशिए में नहीं लिखना चाहिए!
Candidates must not write on this margin.

लिए आवासीय सुविधाएं

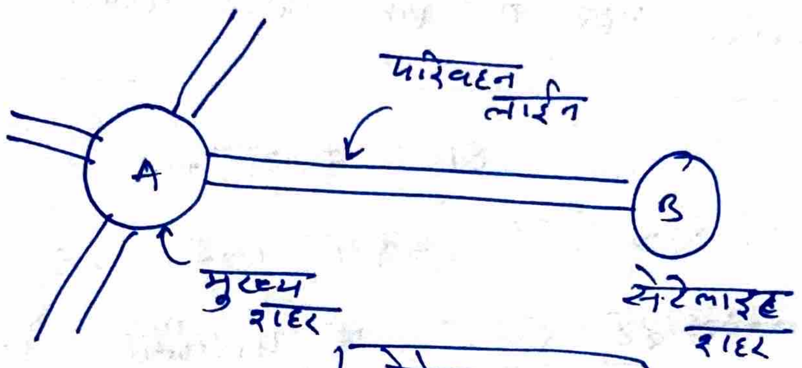

सेटेलाइट शहर

सेटेलाइट शहर से लाभ :—

1) जनसंख्या का पुनर्वितरण सुनिश्चित
2) संसाधनों का अनुकूलतम दोहन संभव
3) लोगों द्वारा स्वस्थ व शांत जीवन
4) आर्थिक विकास में वृद्धि
उदा० - गुडगाँव
5) प्रवास पर उचित प्रबंधन
6) नवीन परिवहन व्यवस्थाओं के कारण लोगों की अपने निकट सम्बन्धियों से निकटता

कंटेंट की समझ ठीक है

अतः सेटेलाइट शहर धीरे-धीरे मुख्य शहर में बदल जाता है एवं युग्म-शहरों का विकास होता है।

4.5/10

(Please do not write anything except the question number is this space)
कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें!

UPSC

Answer Questions in NOT MORE THAN the Word Limit specified for each in the Parenthesis.
Content of the Question is more important than length.
(Specimen Answer Booklet - For Practice Purpose Only)

उम्मीदवारों को इस हाशिए में नहीं लिखना चाहिए!
Candidates must not write on this margin.

⑦ ⓐ रिमलैंड सिद्धांत विश्व की वर्तमान भू-राजनीति को समझने में किस हद तक सहायक है? अपनी राय स्पष्ट रूप से व्यक्त करें।

भूमिका को और बेहतर लिख सकते हो

रिमलैण्ड सिद्धान्त स्पाईकमैन ने मैकीण्डर के हार्टलैण्ड सिद्धान्त के बाद प्रतिपादित किया। मैकीण्डर द्वारा की गयी गलतियों में सुधार की कोशिश स्पाईकमैन द्वारा की गयी।

रिमलैण्ड सिद्धान्त :-

- 1944 में स्पाइकमैन द्वारा
- सम्पूर्ण विश्व को निम्न भागों में बाँटा -

1) **इनर कोर** :- यह वह क्षेत्र है जो मैकीण्डर ने हार्टलैण्ड माना है।

चित्र में रिमलैंड और हर्टलैंड के क्षेत्र को भी दर्शाएं

2) रिमलैण्ड :- स्पाईकमैन ने रिमलैण्ड ब्रिटिश क्षेत्र को माना जो समुद्री सीमा से लगा है। इस सिद्धान्त के अनुसार -

1) जो रिमलैण्ड पर प्रभाव जमाता है वह सम्पूर्ण विश्व पर प्रभाव रखता है।

2) रिमलैण्ड पर प्रभाव रखने के लिए आवश्यक है कि पूर्वी यूरोप पर प्रभाव रखा जाये।

विवरण कम कीजिए

अतः स्पाईकमैन ने अपने सिद्धान्त में -

1) मैकीण्डर के हार्टलैण्ड को नकार दिया कि सीमांत जलवायु, खनिजों की अनुपलब्धता एवं अति न्यून जनसंख्या के कारण यह क्षेत्र विश्व राजनीति को प्रभावित नहीं कर सकता

2) ब्रिटिश क्षेत्र जो कि समुद्र के निकट है। समुद्र तक पहुँच के

(Please do not write anything except the question number is this space)
कृप्या इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें!

UPSC

Answer Questions in NOT MORE THAN the Word Limit specified for each in the Parenthesis.
Content of the Question is more important than length.
(Specimen Answer Booklet - For Practice Purpose Only)

उम्मीदवारों को इस हाशिए में नहीं लिखना चाहिए!
Candidates must not write on this margin.

वर्तमान में प्रौलोगिकी ↓ शंघाई सहयोग संघटन के रोल इंग्लैण्ड कि ने प्रभावी

कारण एक विशेष स्थिति रखता है। यह विश्व-राजनीति को परिवर्तित करने का सामर्थ्य रखता है।

3) जिस देश के पास समुद्र शक्ति है वह अन्य की तुलना में स्वयं को उचित व सुरक्षित स्थिति में पाता है।

रिमलैण्ड को स्थिति अब हासिल की जगह आर्थिक ले गई है

उदाहरण एवं महत्व :-

1) ब्रिटेन की साम्राज्यवादी नीति जिसमें ब्रिटेन ने अमेरिका, भारत जैसे देशों को गुलाम बनाया।

2) द्वितीय विश्व युद्ध के बाद हुए अनेक युद्ध जैसे - उ० कोरिया व दक्षिण कोरिया, भारत-पाकिस्तान व भारत-चीन का युद्ध

3) IOR व BIMSTEC जैसे समूह

4) अमेरिका व चीन की प्रशान्त महासागर में बदली स्थिति

आलोचना :-

1. स्पाईकमैन ने नवीनतम तकनीकों यथा बैलिस्टिक, क्रूज मिसाइल, उपग्रह आदि का समावेश नहीं किया
2. वह शीत युद्ध को समझाने में असफल रहा
3. द्वितीय विश्व युद्ध के बाद से ही USA सुपरपावर बनकर उभरा
4. परिवहन के विभिन्न संसाधनो जैसे पाईपलाईन परिवहन एवं वायु परिवहन पर ध्यान नहीं।

स्पाईकमैन ने उपलब्ध तकनीकों एवं संसाधनों के आधार पर भू-राजनीति को समझाने की कोशिश की जो उस समय प्रासंगिक भी थी।

विषयवस्तु, की लम्बाई ठीक है

10/20

7) b)

'जनसंख्या में तेजी से वृद्धि की प्रवृत्ति 'सकारात्मक' और 'निवारक' नियंत्रण के बिना आर्थिक उपलब्धियों का शोषण करती है'। जनसंख्या के माल्थसियन सिद्धांत के प्रकाश में कथन पर चर्चा कीजिये।

भूमिका भी लिखें

माल्थस ने अपना जनसंख्या सिद्धान्त निम्न परिकल्पनाओं के आधार पर दिया –

1. व्यक्ति का अपने विपरीत लिंग के प्रति आकर्षण होता है।

२ जनसंख्या में बढ़ने की प्रवृत्ति पायी जाती है।

माल्थस का सिद्धान्त –

1) जनसंख्या ज्यामितीय गति से बढ़ती है – 1, 2, 4, 8 - - - -

2) खाद्य संसाधन गणितीय गति से बढ़ते हैं – 1, 2, 3, 4. - - -

3) जनसंख्या प्रत्येक 25 वर्ष में दोगुनी हो जाती है।

4) जनसंख्या के लिए किसी समय पर खाद्य संकट आयेगा।

5) यदि मानव निरोधी प्रक्रिया नहीं अपनाता तो प्रकृति निवारक निरोध अपनाएगी।

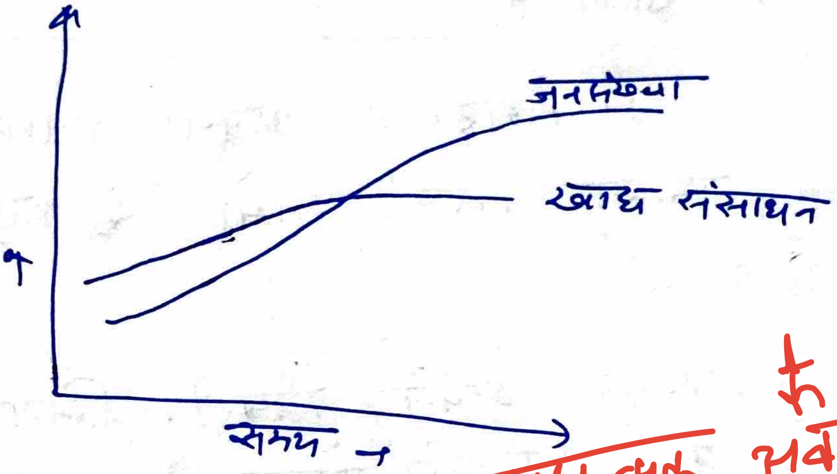

निरोध दो तरह के होते है:–

1. सकारात्मक अवरोध – बाढ़, सूखा, अकाल
2. नकारात्मक अवरोध – समलैंगिकता, तलाक, विवाह की आयु में वृद्धि आदि

आलोचना –

1. माल्थस के सबसे बड़े आलोचक मार्क्स रहे। इनके अनुसार खाद्यान्न में कमी पूंजीपतियों द्वारा अत्यधिक संग्रहण के कारण होगी।
2. 25 वर्ष में जनसंख्या दोगुनी होने की परिकल्पना मनमानी लगती है।

माल्थस के अनुसार सकारात्मक अवरोध → जनसंख्या वृद्धि को न रोकने पर → युद्ध, बिमारी, गरीबी, आपदा के कारण स्वत: जनसंख्या कम हो जाएगी

3) धर्म, मूल्य, सामाजिक प्रयोगों को कोई महत्व नहीं

4) खाद्यान्न में तकनीकी प्रयोगों से वृद्धि सम्भव है
जैसे - हरित क्रांति द्वारा

5) जनसंख्या पर तकनीकी प्रयोगों द्वारा नियंत्रण संभव है एवं जनसंख्या ~~सदैव~~ वृद्धिशील नहीं रहेगी।
उदा० - जापान

माल्थस ने अपने प्रायोगिक सिद्धान्त द्वारा जनसंख्या का एक प्रतिरूप प्रस्तुत किया है जिसने लोगों की जनसंख्या की अधिकता एवं भविष्य के खाद्यान्न संकट के लिए आगाह कर दिया था।

प्रश्नानुसार विवरण दें और बेहतर लिख सकते हैं

5.5/15

(7) (c) “जनसंख्या वृद्धि और मानव कल्याण के बीच परस्पर क्रिया जटिल है,” विस्तार से बताएं।

परिचय ठीक है

जनसंख्या वृद्धि एक निरन्तर प्रक्रिया है - नकारात्मक / सकारात्मक। समय के साथ जनसंख्या में होने वाली बढ़ोतरी को जनसंख्या वृद्धि कहते हैं।

मानव कल्याण एक व्यापक अवधारणा है जिसे विभिन्न चरों यथा - शिक्षा, स्वास्थ्य व जीवन स्तर के द्वारा मापा जाता है।

जनसंख्या वृद्धि = जन्म दर - मृत्यु दर + प्रवास

जनसंख्या वृद्धि के तरीके -

1) जन्म दर - प्रति 1000 स्त्रियों / जनसंख्या पर जीवित जन्मे बच्चों की संख्या को जन्म दर कहते हैं। (भारत में 13)

- विकासशील देशों - भारत, नाइजीरिया में यह अधिक देखने को मिलती है।
- विकसित देशों में यह धीरे-धीरे कम हुई है।

(Please do not write anything except the question number is this space)
कृप्या इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें!

UPSC

Answer Questions in NOT MORE THAN the Word Limit specified for each in the Parenthesis.
Content of the Question is more important than length.
(Specimen Answer Booklet - For Practice Purpose Only)

उम्मीदवारों को इस हाशिए में नहीं लिखना चाहिए!
Candidates must not write on this margin.

बढ़ी हुई आबादी के उत्पन्न समस्याएं / मुद्दे

- आय स्तर की उपलब्धी
- खाद्य सुरक्षा
- रोजगार की
- निर्माण

प्रतिस्थापन दर - TFR = 2.1

2) मृत्यु दर - प्रति 1000 जनसंख्या पर होने वाली मृत्युओं की संख्या मृत्यु दर कहलाती है (भारत में 7)

- विकासशील देशों मे मृत्यु दर उच्च
- विकसित देशों में मृत्यु दर निम्न
- जीवन प्रत्याशा में वृद्धि

विकसित देश >70 वर्ष
विकासशील - 60-70 वर्ष
अविकासीत देश - <60 वर्ष

3) प्रवास - आप्रवास - जनसंख्या वृद्धि
उत्प्रवास - जनसंख्या कमी

मानव कल्याण -

1) शिक्षा का व्यापक स्तर - स्कूली शिक्षा
उच्च शिक्षा
↳ महिला व पुरुष शिक्षा में समानता
(भारत में 74%)

2) स्वास्थ्य सुविधा - PHC
CHC
जिला अस्पताल
834 जनसंख्या पर 1 चिकित्सक भारत मे

3) प्रसन्नता - वैश्विक खुशी सूचकांक
↳ SDSN द्वारा

(i.) स्वतंत्रता (iv) स्वास्थ्य
(ii) आय (v) भ्रष्टाचार की अनुपस्थिति
(iii) उदारता (vi) सामाजिक सहयोग

5) जीवन स्तर में वृद्धि — आय
— रोजगार
— कौशल

जनसंख्या वृद्धि व मानव कल्याण :-

1) अधिक जनसंख्या – जनांकिकीलाभांश
- कम कौशल ↓ मानवकल्याण नहीं
- अधिक कौशल ↓ उचित मानव कल्याण

स्वास्थ्य सुविधाओं में कमी होगी।

2) न्यून जनसंख्या – सुरक्षा की चिंता
- संसाधनों का निम्न उपयोग
- मानव कल्याण के उचित अवसर

अन्य बिन्दुओं को भी शामिल करें

3) मानव कल्याण देश की जनसंख्या नीतियों द्वारा प्रभावित होता है

4) वैश्विक प्रतिस्पर्धा जैसे - HDI एवं वैश्विक खुशहाली सूचकांक आदि।

अतः जनसंख्या मे तीव्र वृद्धि के साथ-साथ सभी के लिए कल्याण सुनिश्चित करना आवश्यक है ताकि अधिकतम संसाधन उपयोग सुनिश्चित हो सके

6/15

Q (a) नगर प्रसार पर एक संक्षिप्त टिप्पणी लिखें और नगर प्रसार के पैटर्न पर भी चर्चा करें।

नगर प्रसार से आशय

मेयर्स के अनुसार नगरीय सुविधाओं एवं विशेष कार्यों का धीरे-धीरे सीमान्त क्षेत्रों की ओर उत्थान होना है।

भूमिका ठीक है

ग्रामीण अर्थव्यवस्था → भूमि उपयोग में परिवर्तन
↓
व्यवसाय में परिवर्तन
↓
नगरीय-ग्रामीण अर्थव्यवस्था ← नगरीय परिदृश्य

नगर प्रसार के कारक :

① Push factor –

(i) नगर में भूमि की अनुपलब्धता
(ii) नगरीय पर्यावरण प्रदूषण
(iii) नगर में भूमि का उच्च किराया

(iv) श्रमिकों की आय मे वृद्धि

(v) परिवहन साधनों का विकास

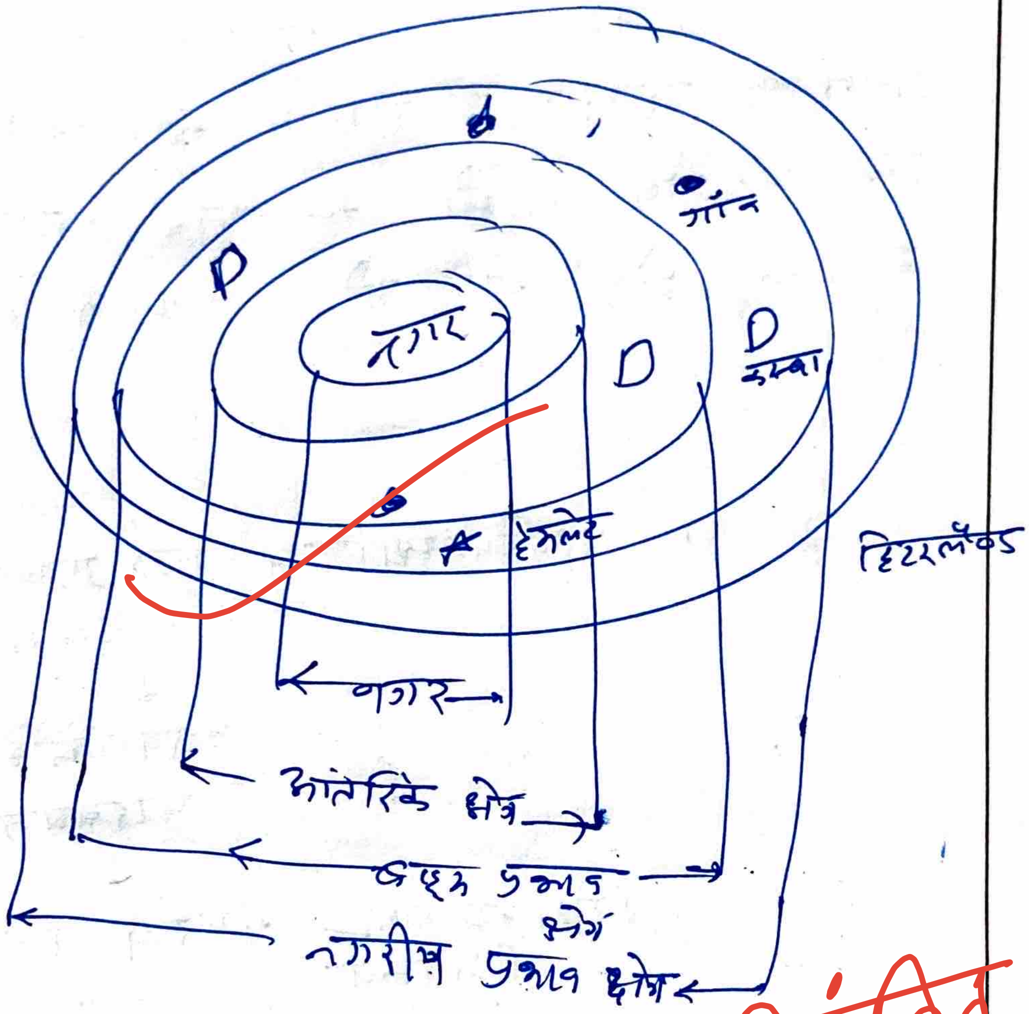
गाँव
D
D
D
कस्बा
नगर
A हेमलेट
हिंटरलैंड
नगर
आंतरिक क्षेत्र
बाह्य प्रभाव क्षेत्र
नगरीय प्रभाव क्षेत्र

2 Pull factor –

(i) गाँव का शान्त वातावरण
(ii) पर्यावरण की स्थिरता
(iii) नगरपालिका करों से मुक्ति
(iv) परिवहन सुविधाएँ
(v) जीवन स्तर मे वृद्धि की आकांक्षा

अनियंत्रित आप्रवासन
- ट्रैफिक में वृद्धि हो
- सस्ती भूमि

नगरप्रसार का पैटर्न -

1) गाँव के लोगों द्वारा नगरीय संस्कृति का अनुसरण
2) MNC, बड़े सरकारी कार्यालयों का प्रसार क्षेत्रों में खुलना
3) फार्म हाउस का निर्माण
4) खेतों का आकार छोटा होना
5) सघन खेती आदि

अतः नगर प्रसार अपने अन्दर समीपवर्ती गाँव को समेट लेता है एवं अन्य नगरों की ओर [illegible]पन। मुख करता है।

तीन पैटर्न

- कम घनत्व वाला निरंतर विकास
- तीव्र छलांग विकास
- रिबन विकास

7.5/20

8 (b) तेजी से शहरीकरण से जुड़ी समस्याओं पर चर्चा करें और इन मुद्दों और समस्याओं को खत्म करने के लिए संभावित उपाय सुझाएं।

शहरीकरण से आशय

विश्व बैंक के अनुसार शहर की जनसंख्या मे वृद्धि से है।

भूमिका ठीक है

भारत की 35% जनसंख्या शहरों मे निवास करती है। 2050 तक यह प्रतिशत 65-70% होने की सम्भावना है।

विश्व के शहरीकरण —

सिंगापुर - 100%
उ. अमेरिका - 82%
द. अमेरिका - 80%
आस्ट्रेलिया - 75%

शहरीकरण से जुड़ी समस्याऐं -

1) औद्योगीकरण व शहरीकरण एक साथ चलते हैं।

2) सामाजिक मूल्यों का ह्रास

3) पर्यावरण प्रदूषण < जल / वायु / ध्वनि

अन्य
↓

4) भूमि की निरन्तर कमी एवं भूमि के दामों में वृद्धि

पारंपरिक व्यवहार और मूल्यों को तोड़ने की प्रवृत्ति

5) मलिन बस्तियों का निर्माण

सीवेज / जल निकासी की समस्या

(उदा.) भारत में लगभग 1.5 लाख मलिन बस्तियाँ - 65 मिलीयन लोग

6) गाँव से प्रवासी के प्रति अनुचित व्यवहार

अपराध बेरोजगारी में वृद्धि

7) संसाधनों का अतिदोहन अत: संसाधनों में कमी

8.) स्वास्थ्य, शिक्षा सुविधाओं में कमी

संभावित उपाय -

1) नियोजित शहरीकरण
जैसे दिल्ली, चंडीगढ़

2) सेटेलाइट शहरों का विकास
जैसे - गुड़गाँव, नोयडा

3) प्रवास पर प्रबंधन

4) स्मार्ट सिटी का विकास
JNNURM, PURA

5) स्वस्थाने मकान - जहाँ झुग्गी वहीं मकान

6) परिवहन साधनों का उचित विकास

7) प्रशासन का डिसेन्ट्रलीकरण एवं समस्या समाधान

कूड़े का बेहतर प्रबंधन

अतः शहरीकरण के विरुद्ध बातें करना, गुरुत्व के नियम के विरुद्ध बातें करने जैसा है - कोरी अनजान|

6.5/15

८ (c)

हार्टशोर्न द्वारा प्रतिपादित सीमाओं के आनुवांशिक वर्गीकरण पर चर्चा करें।

सीमा से आशय मानवकृत सीमा-निर्माण से है। सीमा एक कांतरिक गुण होता है एवं यह केन्द्राभिमुखी प्रवृत्ति दर्शाता है।

गैर-जरूरी लिखा है

हार्टशोर्न द्वारा आनुवांशिक वर्गीकरण-

1) पूर्वगामी :-

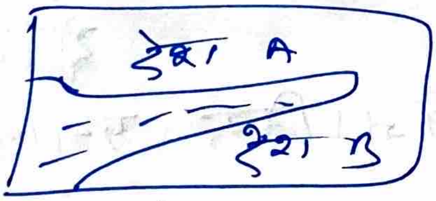

पहले से स्थापित नहर, झील द्वारा सीमा निर्माण
जैसे - कैस्पियन सागर से पृथक देश

कौन से ?

2) परवर्ती / अनुवर्ती -

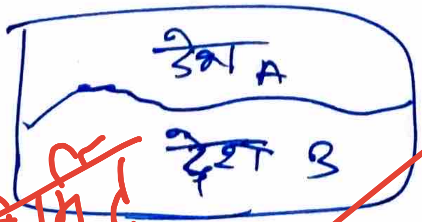

विभिन्न देशों द्वारा निर्मित सीमा
जैसे - भारत-नेपाल

सांस्कृतिक और धर्म के विभाजन से निर्मित

इनको परिभाषित करें

③ अध्यारोपित सीमा।

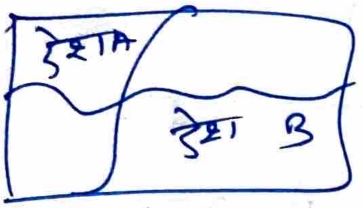

किसी साम्राज्यवादी देश द्वारा पक्षपाती रूप से

④ विनष्ट सीमा —

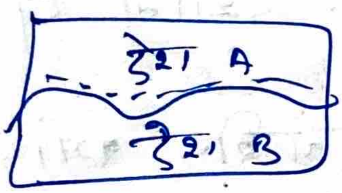

पहले सीमा थी किन्तु अब नष्ट हो गयी है
जैसे - बर्लिन की दीवार

इसके मनोवैज्ञानिक प्रभाव रहते हैं

अतः सीमा एक ऐसी स्थिति है जो परिवर्तनशील है एवं दो प्रदेशों के मध्य विभाजन को जन्म देती है।

5.5/15